हरियाणवी लोक संगीत में प्रचलित वाद्य

डॉ० चिंकी रानी
सहायक प्रोफेसर,
एस.ए. जैन कॉलेज, अम्बाला सिटी ।

लोकगीत से हमारा अभिप्राय ऐसे संगीत से है जो लोगों से जुड़ा हुआ है। जब मनुष्य अपने मन के भावों को बिना किसी शास्त्रीय नियमों की पालना किए प्रकट करें वह लोक संगीत है। लोक संगीत किसी समाज की संस्कृति का प्रकटीकरण करता है शादी ब्याह, कटाई–बुआई प्रेम वेदना इत्यादि से जुड़े गीत जिसमें साधारण जन अपने अन्दर छुपे भावों को उजागर करता है इत्यादि लोक संगीत है।

हरियाणा का लोक संगीत भी अपने विशिष्ट स्थान के कारण विख्यात है। यहाँ के लोक संगीत में 'रागिनी' नामक शैली विशेष रूप से प्रचलित है। यद्यपि यह एक स्वछन्द शैली है किन्तु कहीं–कहीं इसमें शास्त्रीय संगीत का स्पष्ट रूप देखने को मिलता है। हरियाणा रागिनी में दुर्गा, भूपाली की झलक दिखाई देती है। यहां के लोक संगीत में प्रचलित वाद्यों की बात की जाए तो विभिन्न प्रकार के वाद्यों का प्रयोग होता है जोकि हरियाणवी संस्कृति को प्रकट करता है। हरियाणा के लोक गीतों में प्रचलित वाद्यों का वर्णन करने से पहले वाद्यों के प्रकार का वर्णन करना आवश्यक है, वाद्यों के चार प्रकार है जिसमें तंत्री वाद्य, अवनद्ध वाद्य, सुषिर वाद्य व धन वाद्य आते हैं।

तन्त्री वाद्यों में तार वाले वाद्यों को लिया जाता है जिसे गज, नाखून इत्यादि का प्रयोग करके बजाया जाता है – जैसे सारंगी। अवनद्ध वाद्यों से अभिप्राय चमड़े से मड़े हुए वाद्य हैं जिसे हाथों से थाप देकर, लकड़ी की डंडी इत्यादि से बजाया जाता है। जैसे ढोलक, डफली।

सुषिर वाद्यों का मतलब फूंक वाले वाद्य हैं जिसमें फूंक मारकर या कृत्रिम रूप से हवा उत्पन्न की जाती है और वाद्यों में से ध्वनि उत्पन्न की जाती है। जैसे बांसूरी, शहनाई इत्यादि।

धन वाद्य वे वाद्य है जो धातु से बने होते हैं। दो धातुओं को आपस में टकराने

से या आघात करने से इन वाद्यों का वादन किया जाता है जैसे घंटी, चिमटा इत्यादि।

हरियाणा में प्रचलित वाद्ययंत्र

घंटियां

यह सामान्यतः मंदिरों में आरतियाँ और कीर्तनों और अन्य धार्मिक प्रदर्शनों पर बजाई जाती हैं।

चिमटा

यह लंबे और चपटे लोहे के टुकड़े होते हैं जिन्हें एक तरफ से जोड़ा जाता है, जिन पर छोटी–छोटी घंटियाँ लगी होती हैं।

घड़ा

मिट्टी का घड़ा सबसे सस्ता वाद्य यंत्र है जो विभिन्न अवसरों पर लय को बनाए रखने के लिए बजाया जाता है।

ढोलक

यह ढोल का छोटा रूप है जिसे ज्यादातर गुड़गांव जिला के अहीरो द्वारा प्रयोग में लाया जाता है।

ढोल

यह द्विपक्षियों ढोल है जिसे दो छोटी लकड़ी की डंडियों से बजाया जाता है। यह बेलनाकार लकड़ी का होता है जिसे दोनों तरफ से खाल से मढ़ते हैं, इस वाद्य यंत्र की बहुत सी किस्में हैं। यह विवाह उत्सव, कुश्ती प्रतियोगिता और नृत्य प्रदर्शनों आदि के अवसरों पर उपयोग में लाया जाता है।

बीन

इस यंत्र को अधिकांश सपेरे उपयोग में लाते हैं, खोखली तुम्बी में दो छोटी लकड़ी की नालिया लगाई जाती हैं, एक स्वर को निकालते हुए मूल सवर के पृष्ठनाथ को बनाए रखती है और दूसरी प्रदर्शक द्वारा स्वर उत्पन्न करने के लिए उपयोग में लाई जाती है।

शहनाई

यह तंत्र को विशेष रूप से विवाह के अवसरों पर बजाया जाता है इस वाद्य यंत्र में आधुनिक विशेषज्ञ ने तंत्री वाद्य यंत्र के सम्मान में तरलता ला दी है।

बांसुरी

यह प्राचीनतम वाद्य यंत्र है जिसे मुरली जैसे लोकप्रिय नाम से भी पुकारा जाता है। लकड़ी की खोखली डंडी में 7 गोल छिद्र करके बनाया जाता है।

शंख

मानव को ज्ञात सबसे प्राचीन वाद्य यंत्र है। उपयोग में लाने से पहले शंख के आधार में इस प्रकार सावधानीपूर्वक छेद किया जाता है कि इसका प्राकृतिक छेद न बिगड़े। इस यंत्र को प्राय मंदिरों और तीर्थ स्थानों पर उपयोग में लाया जाता है। यह केवल पृष्ठानाद उत्पन्न करता है। महाभारत युद्ध क्षेत्र में श्रीकृष्ण द्वारा उपयोग में लाए गए शंख को पंचजन्य कहा जाता है।

खंजरी

यह डफ की छोटी किस्म है, अंतर केवल यह है कि इसके चारों और घुंगरू लगे होते हैं। इसे सामान्यतः एकल नृत्य प्रदर्शनों में उपयोग में लाया जाता है।

इकतारा

एक एकल–तंत्री यंत्र की उंगलियों से बनाया जाता है। यह 1 मीटर लंबे बांस के टुकड़े का बना होता है जिसके एक सिरे पर बड़ा तुंबा लगा होता है। यह दो तंत्री यंत्र है और यह इकतारा की तरह उसी प्रयोजन को पूरा करता है।

झांझ

यह कांसे के दो बड़े गोल टुकड़े होते हैं जो नृत्य या अन्य अवसरों पर धात्वीय ध्वनि उत्पन्न करते हैं।

डमरु

यह बहुत छोटा ढोल होता है और इसकी आकृति रेतघड़ी जैसी होती है। यह भगवान शिव का प्रतीक है जिसके बारे में कहा जाता है कि इसे उन्होंने तांडव नृत्य के दौरान बजाया था। यह धार्मिक और अनुष्ठानिक लोक संगीत में विशेष रूप में गंगा नृत्य में उपयोग में लाया जाता है यह जादूगर द्वारा जादू का खेल दिखाने के समय भी उपयोग में लाया जाता है।

घुंघरू

घुंघरू यह नर्तकी द्वारा अपने टखनो पर बांधे जाते हैं ताकि नृत्य को शक्ति

प्रदान कर और प्रभारी बना सके। यह लय उत्पन्न करने में सहायक होते हैं।

डेरू

डमरु का बड़ा रूप है लेकिन यह भी वही प्रयोजन पूरा करता है।

ताशा

यह एक एकपक्षीय मिट्टी का यंत्र होता है जिसे दो छोटी डांडियों से बजाया जाता है इसे विशेष अवसरों पर और कभी–कभी नृत्य प्रदर्शन के अवसर पर भी बजाया जाता है।

नगाड़ा

यह एक–एक पक्षीय ढोल है लेकिन यह बड़ा और भारी होता है और बजाते समय इसे जमीन पर रखा जाता है। यह सामंती काल का अवशेष है, जब राज्य घोषणाए नगाड़ा बजा कर की जाती थी।

सारंगी

इस एक तंत्री यंत्र को उस गज के साथ बजाया जाता है जो पशु के बालों की लट को कमान रूपी लकड़ी पर चिपका कर बनाया जाता है। मुख्य गायक के साथ यह यंत्र का होना अति महतवपूर्ण है यह 60 सेंटीमीटर लंबे लकड़ी के टुकड़े को खोखला कर बनाया जाता है। समस्वरण के लिए 4 खूंटे लगाए जाते हैं ताकि 12 अर्ध–स्वरको के तारतत्व के अनुसार तारों को लगाया जा सके। यह घुमक्कड़ जोगियों तथा स्वांग प्रदर्शन के दौरान उपयोग में लाया जाता है।

खरताल

यह लकड़ी के दो टुकड़ों पर लगे छोटे घुंघरू होते हैं और अन्य वाद यंत्रों की ताल के अनुसार लय को बनाए रखने के लिए उन्हें एक दूसरे पर मारते हैं।

झिल

यह नगाड़ा का छोटा रूप है और इसे छोटी डंडियों से बजाय जाता है। यह हमेशा ही नगाड़े के बाई ओर रखा जाता है। वास्तव में यह नगाड़े का एक भाग है जो तबले की तरह है।

डफ

यह एक पक्षीय ढोल होता है और नृत्य के साथ विशेष रूप से धमाल नृत्य

के साथ लगाया जाता है और यह महेन्द्रगढ़ जिले में लोकप्रिय है। यह बनावट ने बड़ा सरल होता है और इसमें केवल एक खुला गोल फ्रेम होता है। जो केवल एक तरफ से खोल से मढ़ा होता है। यह हाथ से या छोटी डंडियों से बनाया जा सकता है। यह उत्सव संबंधी अवसरों पर भी बताया जाता है।

मंजीरा

यह धात्विक झाँझो का एक जोड़ा होता है जिसे लय उत्पन्न करने के लिए प्रयोग किया जाता है। नाथ परंपरा के जोगियों द्वारा अपनी प्रार्थना के दौरान इसका उपयोग किया जाता है।

हारमोनियम

मूल रूप से हारमोनियम भारत से संबंधित नहीं है, फिर भी हारमोनियम पर सांस्कृतिक प्रदर्शनों में दिखाई देता है। हरियाणा में यह सांगियों और भजनियों द्वारा संगत यंत्र के रूप में उपयोग किया जाता है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष के रूप में यही कहा जा सकता है कि हरियाणवी लोक संगीत में प्रचलित वाद्य हरियाणवी संस्कृति का परिचायक है जिसे जनसमुदाय द्वारा पसन्द किया जाता है यद्यपि यह लोक संगीत शास्त्रीय नियमों से परे होते हैं लेकिन शास्त्रीय नियमों का कहीं न कहीं प्रयोग देखने को मिलता है हरियाणवी वाद्यों के प्रयोग से लोक संगीत की सुन्दरता और बढ़ जाती है इन सभी वाद्यों का प्रयोग हरियाणवी लोक संगीत के साथ अन्य राज्यों के लोक संगीत के साथ भी प्रयोग किया जाता है तथा शास्त्रीय संगीत में भी इन वाद्यों का प्रयोग किया जाता है।

हरियाणा के लोक संगीत में प्रचलित वाद्यों संगीत के गौरव को बढ़ाने में सक्षम हैं यद्यपि लोक संगीत अपनी सुन्दरता के कारण वैसे ही लोकप्रिय है परन्तु वाद्यों का प्रयोग इस संगीत में और चार चाँद लगाने में सहयोग करता है।